# अहिंसा : विविध मार्ग

सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान)
राजकीय महाविद्यालय, केकड़ी (अजमेर) राज.
nitachauhan394@gmail.com
Contact No.- 9413076060

।इेजतंबज. प्रस्तुत शोध में अहिंसा के विविध मार्गों जैसे सत्याग्रह, असहयोग, बहिष्कार, वार्ता, शिक्षा, खोजबीन, उपवास आदि का विवेचन किया गया है। जब सरकार की नीतियां जनता के प्रतिकूल और अस्पष्ट होती है तब जनता यदि विरोध व्यक्त करने के लिए हिंसा के बजाय अहिंसा का मार्ग चुनती है तो देश में अराजकता का वातावरण नहीं बनता। चूंकि हिंसा का मार्ग केवल अशांति और विध्वंस को जन्म देता है, इसलिए अहिंसा के मार्गों का अनुसरण कर ना सिर्फ वर्तमान वरन् भविष्य की समस्याओं का भी स्थायी समाधान किया जा सकता है।

ज्ञमल ॅवतक :– अहिंसा, असहयोग, सत्याग्रह, बहिष्कार, पदत्याग, उपवास, शोधन, अन्यायपूर्ण नीतियां, आत्मोत्सर्ग।

प्रस्तावना :– प्रस्तुत शोध में अहिंसा के विविध मार्गों पर प्रकाश डाला गया है, जिनका न सिर्फ भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रयोग किया गया, बल्कि अन्य राष्ट्रों में भी प्रयोग कर सफलता प्राप्त की गई।

उद्देश्यः– प्रस्तुत शोध में गांधी द्वारा प्रयुक्त अहिंसा के मार्गों की चर्चा गांधी विचार विश्लेषक त्पबींतक ठंहहमज क्मंसे ने भी की है। वर्तमान समय में जबकि देश में अराजकता का वातावरण व्याप्त है, धर्म के नाम पर विद्वेष बढ़ रहा है। ऐसी ही स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी है। राष्ट्रों के बीच अविश्वास बढ़ रहा है। परमाणविक हथियारों की होड और उनका प्रयोग विश्वशांति एवं पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रही है। ऐसे में इस शोध का उद्देश्य अहिंसा के मार्गों की चर्चा एवं इनका अनुसरण कर राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शांति व सौहार्द का वातावरण निर्मित करना है। निश्चित रूप से गांधी द्वारा सुझाए गए अहिंसा मार्गों में से कोई न कोई मार्ग तो वर्तमान संदर्भ में प्रासांगिक हो सकता है।

अहिंसा का मार्ग खुली जांच एवं खुले हृदय का मार्ग है। विचारों का पूर्वाग्रह सत्य व अहिंसा के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करता है। स्वतंत्र व निष्पक्ष तरीके से की गई जांच जहां एक ओर चिंतन को पूर्णता एवं सच्चाई का ठोस आधार प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर सही निर्णय तक पहुंचने का मार्ग भी प्रशस्त करती है। सत्य का स्वरूप विराट है, इसलिए केवल कभी–कभी अपने मत का पूर्वाग्रह सत्य को भी असत्य कर देता है। अपने मत के साथ दूसरे के मत का भी आदर वैचारिक अहिंसा है और यही हमें विराट सत्य का दिग्दर्शन करा सकती है।

वेदों की ऋचाओं में इस बात का उल्लेख मिलता है–मेरे ओर आपके गोपनीय विषय एक हो इसका अभिप्राय यही है कि हमारा हृदय जितना खुला और विशाल होगा, उतना ही हमारे पास छुपाने के लिए कुछ नहीं होगा। जहां छुपाने के लिए कुछ होता है वहां आपके और मेरे

गोपनीय विषय एक नहीं हो सकते। इसी तरह अहिंसा का मार्ग कुछ भी छिपाने का मार्ग नहीं है, बल्कि दूसरों के समक्ष अपना हृदय खोल देना है।

अहिंसा के मार्ग के लिए जहां एक ओर आत्म शुद्धि जरूरी है, वहीं दूसरी ओर अन्याय के अहिंसक विरोध हेतु अहिंसक साधनों का प्रयोग भी आवश्यक है। आत्म शुद्धि के लिए प्रार्थना, उपवास, आध्यात्मिक संगीत, ध्यान व योग आदि साधन है। बहिष्कार, असहयोग, पदत्याग, सत्याग्रह आदि अहिंसक प्रतिकार के मार्ग हैं। उपवास करने से आत्मशुद्धि होती है, जिससे व्यक्ति में अहिंसा की शक्ति का विकास होता है और उसी शक्ति का अहिंसक प्रतिकार के लिए प्रयोग किया जाता है। अहिंसा के मार्गों का प्रयोग स्वतंत्रता संग्राम में गांधी व उनके सहयोगियों द्वारा किया गया। अहिंसा के मार्गों की चर्चा गांधी विचार विश्लेषकों त्पबींतक ठंहहमजप क्मंजे ने भी की।

अहिंसा के मार्गों का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है –

1. असहयोग :– असहयोग शोधन की प्रक्रिया है। यदि जनता के पास पर्याप्त शक्ति है तो वे सरकार की नीतियां उचित होने पर स्वीकार कर सकते हैं और गलत नीतियां होने पर असहयोग के माध्यम से सरकारी गतिविधियों पर अंकुश लगा सकते हैं। यह धीमा, कानूनो व नीतियों में बाधक मार्ग है। यह व्यक्ति के सामाजिक सम्बन्धों को विशुद्ध आधार पर प्रतिस्थापित करने का आन्दोलन है ताकि उसकी मीमांसा हमारे आत्म सम्मान एवं गौरव के अनुकूल की जा सके।[1]

   असहयोग को मूक आत्मोत्सर्ग भी कहा जा सकता है, जिसके द्वारा विदेशी शासन, आततायी शासन के प्रति सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सम्पूर्ण असहयोग का व्यवहार किया जा सकता है। चूंकि लोकतंत्र सहयोग पर आधारित व्यवस्था है। यदि लोकतंत्रीय सरकार अन्याय करती है तो इस अन्यायपूर्ण कार्यों के प्रति आंशिक रूप से ही असहयोग किया जा सकता है, क्योंकि सम्पूर्ण असहयोग करने पर लोगों की लोकतंत्रीय व्यवस्था के प्रति आस्था ही समाप्त हो जायेगी।[2]

2. बहिष्कार :– अनियमित और विकट परिस्थितियों का सामना करने में बहिष्कार एक शक्तिशाली तरीका कहा जा सकता है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरूष अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकता है। यदि कोई व्यक्ति अपनी पहचान उजागर नहीं करना चाहें तो वह गुमनाम रहकर भी कार्य कर सकता है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के समय गांधी एवं तिलक द्वारा देश की पूर्ण स्वतंत्रता तथा स्वदेशी को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से विदेशी संस्थाओं, उपाधियों, पदवियों, कोर्ट, स्कूल, कॉलेज, विदेशी वस्त्र तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का मार्ग अपनाया गया[3] और इसमें व्यापक सफलता भी प्राप्त हुई।

3. सत्याग्रह :– अहिंसा में पूर्ण रूप से निष्ठा रखने वाले मनुष्य का सत्य के प्रति आग्रह ही सत्याग्रह कहलाता है। सत्याग्रह में सत्य के लिए सब कुछ सहन किया जाता है। दूसरे

व्यक्ति को तनिक भी कष्ट न होने पाये यही सत्याग्रह की उच्च महत्वाकांक्षा होती है।[4] सत्याग्रह में बुराई, असत्य, अन्याय एवं अवांछनीय स्थिति का मुकाबला प्रेम से करने पर बल दिया जाता है। जो व्यक्ति सत्याग्रह के मार्ग पर चलता है, उसके मन में विरोधी के प्रति घृणा, क्रोध, असत्य एवं छल कपट का पूर्ण निषेध होता है। सत्याग्रही के द्वारा विरोधी के साथ अपना आध्यात्मिक रिश्ता स्थापित किया जाता है ओर विरोधी के मन में यह भावना जाग्रत करता है कि वह बिना अपने व्यक्तित्व को हानि पहुंचाएं उसे हानि नहीं पहुंचा सकता। सत्याग्रह सभी के लिए प्रेम का मार्ग है। वह अपने सभी रूपों में तथा सभी परिस्थितियों में हिंसा का पूर्ण परित्याग करता है।[5]

सत्याग्रह का प्रयोग सबसे पहले खुद पर किया जाता है। जब व्यक्ति के हृदय में अहिंसा की स्थापना होगी तभी परिवार, पड़ोस, गांव, समाज, राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्त मानव तथा मानवेत्तर प्राणियों को इसमें शामिल किया जा सकता है। सत्याग्रह प्रत्यक्ष कार्यवाही का सबसे सशक्त माध्यम है। जब हमारे सब उपाय विफल हो जाये तब सत्याग्रह का प्रयोग करना चाहिए। सत्याग्रह को एक बार आरंभ करने के बाद केवल गलत होने के अतिरिक्त सत्याग्रही पीछे नहीं लौटता, वह अन्ततोगत्वा सफलता प्राप्त करता है। गांधी द्वारा दक्षिण अफ्रीका व भारत में किये गए सत्याग्रह, गोरों द्वारा दास व्यापार के विरोध में किया गया सत्याग्रह इसी तरह के उदाहरण है जो स्पष्ट करते हैं सत्य के लिए किये जाने वाले विरोध की परिणति सफलता प्राप्ति में होती है।[6]

4. सामाजिक बहिष्कार :– यह अहिंसा का कठिन मार्ग है इसकी विद्यमानता प्राचीन समय से रही है और अब इसने एक संस्था का स्वरूप ले लिया है। ऐसे लोगों का जो जनमत की उपेक्षा करते हैं, असहयोग को असफल करने का प्रयास करते हैं, सामाजिक बहिष्कार किया जाना चाहिए। लेकिन इसका प्रयोग सीमा में होना चाहिए। गांधी जी का मानना था कि सामाजिक सेवाओं से न तो व्यक्ति को वंचित किया जा सकता और न उनके साथ दुर्व्यवहार किया जा सकता है। इसका उग्र रूप से प्रयोग होने पर हिंसा व दबाव बढ़ता है।[7] जब व्यक्ति बहिष्कार को दण्ड के रूप में स्वीकार न कर अनुशासनात्मक कार्यवाही के रूप में स्वीकार करता है तो वह प्रभावकारी साधन सिद्ध होता है।

5. शिक्षा :– खोजबीन की सफलता का व्यापक स्वरूप शिक्षा है। केवल कक्षाओं या पुस्तकों से शिक्षा नहीं मिलती वरन् हर एक घटना, यहां तक कि प्रकृति के छोटे से छोटे अंग, हर शब्द जो सत्य का संदेश देता है, शिक्षा का संवाहक कहा जा सकता है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जो तीव्रता देखी गई वह जन धन में राष्ट्रीय चेतना के जागरण की शिक्षा का परिणाम सही थी। शिक्षा के कारण महिलाओं ने भी स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी थी। फिलीपीन्स के उदाहरण से इसे ओर अच्छे से समझा जा सकता है। जब वहां सैनिक कानून के समय महत्वपूर्ण मामलों को धार्मिक पत्र ैपही वि जीम जपउमे में छापा गया, जिन्हें वहां के अखबारों में प्रकाशित नहीं किया गया था। जब सरकार द्वारा इन्हें रोका गया तो दूसरा पत्र दूसरे व्यक्ति के नाम से प्रकाशित किया गया। जब

सरकार का दमन चक्र चला पत्रों की कॉपियों को डाकघर में जब्त किया गया। छपाई पूर्णतः रोक दी गई तो भी एक बिशप द्वारा पत्रों के माध्यम से जनचेतना जाग्रत की जाती रही।[8] यह एक घटना है जो सिद्ध करती है कि शिक्षा के माध्यम से सरकारी दमन चक्र का विरोध जनता कर सकती है क्योंकि शिक्षा वह माध्यम है जिसके द्वारा खोजबीन संभव भी होती है और प्रसारित भी।

6. खोजबीन :– अन्याय का विरोध करने, सत्य को प्रकाश में लाने, मजदूरों की स्थिति में सुधार करने तथा पुलिस के दमन चक्र व सरकार के अन्यायपूर्ण कानूनों का विरोध करने के लिए खोजबीन को शक्तिशाली साधन माना जा सकता है। अगर खोजबीन सावधानी पूर्वक ईमानदारी से की जावे तो बहुत बड़ी संख्या में लोगों को सत्य से अवगत करा सकती है। एक पीड़ित व्यक्ति अपने उपर हुए अत्याचारों की सीमा को स्वयं सीधे नहीं जान सकता। संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति रिचर्ड रीजन काफी शक्तिशाली थे, लेकिन जैसे ही वाटरगेट काण्ड की खोजबीन शुरू हुई, उनकी शक्ति और लोकप्रियता दोनों ही कम होने लगी।[9] भारत में 1917 चम्पारन, 1918 खेड़ा सत्याग्रह, 1918 अहमदाबाद मिल मजदूरों का सत्याग्रह, 1928 में बारडोली सत्याग्रह की सफलता, अत्याचारों की व्यापक खोजबीन के परिणामस्वरूप लिए गए निर्णय के कारण हुई थी। अगर खोजबीन स्वतंत्र एवं व्यापक हो तो गंभीर समस्याओं का समाधान संभव है।

7. पद त्याग :– अन्याय मूलक व्यवस्था को कमजोर करने का महत्वपूर्ण मार्ग पद त्याग है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद नार्वे में हजारों अध्यापकों ने नाजी शिक्षा को पढ़ाने की अपेक्षा इस्तीफा देना उचित समझा। सम्पूर्ण न्यायालयों ने नाजी कानून को लागू करने की बजाय त्याग पत्र दे दिया। बिशपों और पादरियों ने राज्य के चर्च में कार्यकर्ताओं के पद से त्याग पत्र दे दिया। भारत में जब असहयोग आन्दोलन चला टी प्रकाशम, जवाहरलाल नेहरू, देशबन्धु, चितरंजन दास, मोतीलाल नेहरू, अरूणा आसफ अली ने वकालत से त्याग पत्र देकर आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी।[10]

8. वार्ता :– विवादास्पद मामले सुलझाने के लिए वार्ता का प्रयोग भी सर्वाधिक प्रचलित तरीका कहा जा सकता है। अतएव वार्ता की प्रत्येक संभावना पर विचार करना चाहिए। समझौते की बातचीत का फायदा यह होता है कि विरोधी का हृदय परिवर्तन करने की क्षमता अहिंसक प्रतिरोधी में विकसित होती है।[11] यदि कानूनों के किसी भाग में सुधार हेतु अपील की जा सकती है तो इसे संभव बनाने के लिए वार्ता का आधार होना चाहिए। अमरीका में अश्वेतों को मानव अधिकारों के लिए जब लड़ना पड़ा तो उन्होंने बहिष्कार को नहीं अपनाया और तब तक डटे रहे, जब तक कि समझौता नहीं किया गया।[12] भारत के संदर्भ में हम देखें गांधी की नीति वार्ता समर्थक रही थी। आन्दोलन करने के बाद भी वार्ता का मार्ग खुला रखते थे। 1930 में शुरू किया गया सविनय अवज्ञा आन्दोलन पूर्ण आजादी के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए था लेकिन जब ब्रिटिश सरकार द्वारा विरोध किया गया तो इसे बन्द करने के बाद गांधी जी ने लार्ड इरविन के साथ 1931 में समझौता वार्ता की।[13]

हालांकि न्यूनतम मुद्दों पर ही समझौता हो सका लेकिन इस वार्ता ने भविष्य के लिए बातचीत का मार्ग खोल दिया।

9. उपवास :– उपवास को अहिंसा का सबसे अधिक शक्तिशाली मार्ग माना गया है। इसका प्रयोग सरलता से अनुचित दिशा में होने के कारण व्यक्ति द्वारा अथवा परामर्श पर होना चाहिए। उपवास के लिए आध्यात्मिक बल तथा मस्तिष्क की श्रेष्ठता आवश्यक होती है। जब किसी के प्रति तनिक भी द्वेषभाव न रखते हुए पूर्ण अहिंसा व सत्य के पालन हेतु उपवास किया जाता है तो हृदय मंथन सरलता से हो जाता है।[14] उपवास को शुद्ध व प्रेम पूर्ण हृदय की प्रार्थना की उच्चतम अभिव्यक्ति भी माना गया है। जब न्याय प्राप्त करने के समस्त उपाय असफल हो जाते हैं तब अन्तिम हथियार के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है। उपवास कभी भी विरोधी पर दबाव डालने के लिए नहीं वरन् साम्प्रदायिक वैमनस्य को दूर करने, साम्प्रदायिक दंगों तथा हिंसा की घटनाओं को रोकने के उद्देश्य से किया जाता है।[15]

गांधी जी ने उपवास का प्रयोग विरोधी को प्रेम से पराजित करने, मजदूरों के हित संवर्धन, रोलेट एक्ट के विरूद्ध आत्मशुद्धि के लिए, साम्प्रदायिक वैमनस्य तथा हरिजनों के प्रति होने वाले अत्याचारों के विरोध में किया और आशातीत सफलता भी प्राप्त की।

अहिंसा के इन मार्गों के अलावा धरना, प्रतीक, गीत, प्रार्थना, अहिंसक धावे के द्वारा भी प्रतिकार किया जा सकता है। इन मार्गों का प्रयोग भी स्वतंत्रता आन्दोलन के समय आंशिक रूप से किया गया और सफलता भी प्राप्त की गई। 1930 में धारासना में नमक के कारखानों तथा 1942 में कोताई व तामलुक पुलिस थानों में अहिंसक धावे किये गये थे[16], असहयोग आन्दोलन के समय स्वदेशी प्रचार के रूप में चरखा कातना राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बन गया था जिससे विभाजित लोगों को एकता के सूत्र में बांधने की प्रेरणा दी। वर्तमान समय में काली पट्टी लगाकर, मौन जुलूस निकालने की प्रक्रिया सरकार की अन्यायपूर्ण नीतियों के विरोध को व्यक्त करती है। स्वतंत्रता आन्दोलन ने चारणों द्वारा गाये देशभक्ति गीतों तथा सत्याग्रहियों द्वारा खेड़ा करबन्दी के समय 1918 में सरकार से की गई प्रार्थना व अहमदाबाद में 1921 में स्वयं सेवकों की प्रार्थना ने भी स्वतंत्रता आन्दोलन के अहिंसक स्वरूप को नयी दिशा प्रदान की।

निष्कर्षः– आलेख में वर्णित अहिंसा के मार्ग 20वीं सदी में प्रयुक्त हुए और अहिंसा को सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इन मार्गों के माध्यम से ना सिर्फ आन्तरिक अशांति को हल करने का प्रयास किया गया, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध व दबावों की समस्याओं का भी समाधान ढूंढने में सहायता मिली और भविष्य में भी इन मार्गों को विविध समस्याओं के अहिंसक समाधान के रूप में प्रयुक्त किया जा सकेगा।

सारांश :– प्रस्तुत शोध में अहिंसा के विविध मार्गों का विशद वर्णन किया गया है। जब सरकार की नीतियां अस्पष्ट होती है, जनता के अनुकूल नहीं होती तब अगर जनता हिंसा की बजाय अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करती है तो अराजकता नहीं फैलती। चूंकि हिंसा का मार्ग केवल अशांति और विध्वंस को जन्म देता है परन्तु अहिंसा का मार्ग न सिर्फ वर्तमान की वरन् भविष्य की समस्याओं का समाधान भी अहिंसक तरीके से प्रस्तुत करता है इसलिए अहिंसा का मार्ग लोकतंत्र के स्वर्णिम भविष्य के लिए सर्वोत्तम मार्ग कहा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1- यंग इण्डिया 20 अप्रेल 1921

2- यंग इण्डिया 24 नवम्बर 1921

3- शिवकुमार गुप्त : आधुनिक भारत का इतिहास पृष्ठ 125–127

4- नरेश दाधीच : महात्मा गांधी का चिन्तन, रावत पब्लिकेशन्स जयपुर 2014 पृ.07

5- रंगनाथ दिवाकर, सत्याग्रह और विश्वशांति पृ.16

6- मनोहर पुरी समकालीन भारत पृ.248

7- यंग इण्डिया भाग एक पृ.300

8- Essay on Non Violence,There de Conihek P-16 The was of Non- Violance, Rechard Baggett Deats P14

9- I Bid P-15

10- आर्य और सैनी, आधुनिक भारत का इतिहास पृ.539

11- रिचर्ड बी ग्रेग, अहिंसा की शक्ति पृ.71

12- रिचर्ड बी ग्रेग, अहिंसा की शक्ति पृ.71

13- पुखराज जैनः प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक पृ.144 साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा 2019

14- मनोहरपुरी, समकालीन भारत पृ.250

15- रामरतन रूचि त्यागी, भारतीय राजनैतिक चिन्तन पृ.290

16- रंगनाथ दिवाकर, सत्याग्रह मीमांसा पृ.78